Date: 4/2/2022

संचार का अर्थ

मनुष्य, के जीवन में भोजन, वस्त्र तथा आवास के साथ-2 मनुष्य की एक मौलिक आवश्यकता हैं - अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना तथा अपने सहजनों के साथ वार्तालाप करना। मनुष्य की यह आद्य प्रकृति हैं। जिसके लिए वह लालायित रहता हैं। प्रोफेसर आई. पी. तिवारी के अनुसार "संचार जीवन के साथ आरम्भ होता हैं तथा जीवन की समाप्ति पर ही, इस पर विराम-चिन्ह लगता हैं। संचार के बिना जीवन अर्थहीन ही नहीं अस्तित्वहीन भी हो जाता हैं।

परिभाषा →

संचार एक आधुनिक विषय हैं। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र जैसे विषयों से इसका सीधा सम्बन्ध हैं।

दहामा के अनुसार -

" संचार समाजीकरण का प्रमुख माध्यम हैं। संचार द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं। संचार की विभिन्न विधाओं के बिना सामाजिक निरन्तरता बनाए रखने की कठिनाइयों का अनुमान सहज ही किया जा सकता है

Date: / /

संचार के रूप या प्रकार ->

हमारे जीवन में संचार कई रूपों या प्रकारों में विद्यमान है। संचार - सम्पर्क हम अनेक रूपों में स्थापित करते हैं। इनमें भाषा और लिपि के अतिरिक्त हमारी भाव - भंगिमाएँ हमारा मुस्कराना, मुँह पिचकाना, पलकें झपकाना, भौंहे तानना, आँखें तरेरना दाँत भींचना, हाथ मारना, पैर पटकना जैसी क्रियाएँ भी सम्मिलित है। संचार के निमित शब्दों की मध्यस्थता आवश्यक नहीं है। दृश्य श्रव्य स्पर्श और घ्राण शक्तियों के माध्यम से संचार सम्पन्न होता है।

संचार के रूपों या प्रकारों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता हैं।

-> वैयक्तिक संचार ->

जाग्रत अवस्था में जीवन का कोई क्षण ऐसा नहीं बीतता जब हम कुछ न कुछ सोचते हुए अपने आप से बातें करते रहते है। यह प्रक्रिया प्रातः सोकर उठते ही प्रारम्भ हो जाती है।

प्राचार्य
...मेमोरियल महाविद्यालय
...क्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलि...